भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"तुलसीदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण भक्तिकाव्य के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। तुलसीदास के जन्म सम्वत् एवं जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद है, इसका कारण है उनकी कोई भी प्रामाणिक जीवनी उपलब्ध नहीं होना। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास का जन्म सम्वत् 1589 वि० और मृत्यु सम्वत् 1680 वि० माना है, जो लगभग सभी विद्वानों (कुछ एक को छोड़कर) को स्वीकार है। इस प्रकार तुलसीदास का जन्म सम्वत् 1589 वि० = अर्थात् सन् 1532 ई० में हुआ एवं मृत्यु सम्वत् 1680 वि० अर्थात् सन् 1623 ई० में हुई। तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। तुलसीजी के पूर्वज उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला के राजापुर गाँव के रहने वाले थे। उनकी पत्नी का नाम रत्नावली था। तुलसीदास ने नरहरिदास से दीक्षा ग्रहण की थी तथा उन्हीं के द्वारा रामकथा सुनी थी। तत्पश्चात् बनारस में रहकर 16 वर्ष तक शेष सनातन की पाठशाला में अध्ययन किया और विविध शास्त्रों की जानकारी प्राप्त की। तुलसीदास के महत्व का प्रतिपादन करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "तुलसीदास का महत्व बताने के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा था, स्मिथ ने उन्हें मुगल काल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा था और यह तो बहुतों ने बहुत बार कहा है कि उनकी रामचरितमानस भारत की बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।

तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली से बहुत

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

अधिक प्रेम करते थे। कहा जाता है कि एक बार उनकी पत्नी अपने मायके चली गयी थी। अपने पत्नी के प्रेम में और काम में आसक्त होकर तुलसीदास आधी रात को अपने ससुराल पहुँच गए। वहाँ रत्नावली के मायके के घर के पास पेड़ पर लटक रहे साँप को रस्सी समझकर ऊपर चढ़ गये और उसके कमरे में पहुँच गये। इस पर रत्नावली ने उन्हें बहुत धिक्कारा और भाव भरे मार्मिक लहजे में स्वरचित यह दोहा सुनाया —

"अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति
नेकु जो होती राम से, तो काहे भव-भीत?"

अर्थात् "मेरे इस हाड़-माँस के शरीर के प्रति जितनी तुम्हारी आसक्ति है, उसकी आधी भी अगर प्रभु से होती तो तुम्हारा जीवन सँवर गया होता।" यह सुनकर तुलसीदास सन्न रह गये। उनके हृदय में यह बात गहरे तक उतर गयी तथा उनके ज्ञान चक्षु खुल गये। उनको अपनी मूर्खता का एहसास हो गया तथा वे एक क्षण भी रुके बिना वहाँ से चल दिये और उनका हृदय परिवर्तन हो गया तथा इन शब्दों की शक्ति ने उन्हें महान् तुलसीदास बना दिया। सम्वत् 1680 वि० अर्थात् सन् 1623 ई० में श्रावण कृष्ण सप्तमी दिन शनिवार को काशी के अस्सी घाट पर 'राम-राम' कहते हुए अपना शरीर परित्याग किया। उनके मृत्यु के सम्बन्ध में निम्नलिखित दोहा बहुत प्रचलित है —

"संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर॥"

तुलसीदास की रचनाएँ —

तुलसीदास की प्रामाणिक रचनाओं के विषय में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। शिवसिंह सरोज में उनकी 19 रचनाओं का उल्लेख है। डॉ० सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने तुलसीदास

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

की 12 रचनाओं को प्रामाणिक माना है। 'मिश्रबन्धु विनोद' में मिश्र बन्धुओ तुलसीदास की 25 रचनाओं का उल्लेख किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने डॉ० सर ग्रियर्सन के मत को प्रामाणिक मानते हुए तुलसीदास की 12 रचनाओं को प्रामाणिक माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास की प्रामाणिक रचनाएँ हैं— रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू तथा कवितावली (हनुमान बाहुक समेत)।

रामचरितमानस—

तुलसीदास का रामचरितमानस मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन-चरित्र को दर्शाने वाला श्रेष्ठ महाकाव्य है। जिसमें तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति एवं कवित्व का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। इसकी रचना अवधी भाषा में तथा दोहा-चौपाई शैली में ~~की~~ तुलसीदास ने की है। रामचरितमानस में रचना कौशल, प्रबन्ध पटुता, एवं सहृदयता आदि गुणों का समावेश है। ~~इसके~~ इसकी कथा 7 काण्डों में विभक्त है— बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड।

जानकी मंगल—

जानकी मंगल एक खण्डकाव्य है। इसकी रचना तुलसीदास ने 216 छन्दों में की है। तुलसीदास की इस रचना पर 'बाल्मीकि रामायण' की कथा का प्रभाव है। इसमें विस्तार से वैवाहिक-मांगलिक कार्यों का वर्णन है। लोकाचार, लोकविश्वास एवं लोकप्रथाओं का इसमें चित्रण है। इसकी भाषा ब्रजावधी एवं शैली सरल तथा सरस है।

पार्वती मंगल— इसकी रचना तुलसीदास ने

पार्वती-परिणय-प्रसंग के आधार पर खण्डकाव्य के रूप में की है। इसकी कथा कालीदास के 'कुमारसम्भव' पर आधारित है। इसमें तुलसीदास जी ने पार्वती के जन्म, तपस्या एवं विवाह का वर्णन विस्तार से किया है। इसकी भाषा ब्रजावधी एवं शैली सरल व सरस है तथा मंगल एवं हरिगीतिका छन्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 164 छन्द हैं।

गीतावली —

तुलसीदास की यह रचना गीत-प्रधान मुक्तक रचना है। इसमें तुलसीदास ने रामकथा के मार्मिक एवं मधुर स्थलों को चुनकर उनका सरस एवं चित्ताकर्षक वर्णन किया है। गीतावली में राम के जन्म से लेकर सीता-निर्वासन तथा लवकुश के बाल-चरित तक के विविध प्रसंगों का वर्णन तुलसीदास ने किया है। इसकी कथा 'रामचरितमानस' से अधिक व्यापक है। गीतावली की कथा 7 काण्डों में विभक्त है। गीतावली में राम के सौन्दर्य का वर्णन तुलसीदास ने किया है। इसमें बालक, किशोर, प्रौढ राम के सौन्दर्य का चित्रण अत्यधिक है। इसकी भाषा ब्रजभाषा है, जिसमें वात्सल्य, शृंगार एवं करुण रस की मार्मिक व्यंजना तुलसीदास ने की है।

कृष्ण गीतावली —

तुलसीदास ने ब्रजभक्तों के ढंग पर कृष्ण-चरित को आधार बनाकर 'कृष्ण गीतावली' की रचना की है। इसमें 61 स्वतंत्र मुक्त पद हैं। इसमें कृष्ण की बाल-सुलभ चेष्टाओं, गोपियों की श्रद्धा, अटूट विश्वास, आत्मनिष्ठा, अनन्यता आदि भावों का मोहक एवं आकर्षक रूप का चित्रण तुलसीदास ने किया है। भाव एवं भाषा की दृष्टि से यह एक वैदग्ध्यपूर्ण रचना है। तुलसीदास जी ने इसमें वात्सल्य एवं शृंगार रस का अत्यन्त ही सजीव एवं सरस चित्रण किया है। कृष्ण गीतावली की भाषा ब्रजभाषा है।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

विनय पत्रिका —

विनय पत्रिका तुलसीदास द्वारा रचित सर्वोत्तम गीतिकाव्य है। 'विनय' का अर्थ है प्रार्थना या अर्जी। इस रचना के माध्यम से तुलसीदास कलिकाल के अत्याचारों से त्रस्त रामराज्य की दुहाई देते हुए अपनी दुःख भरी जीवनगाथा को राम दरबार में प्रस्तुत किया है। यह भक्ति रस का असाधारण काव्य है। भक्ति, विनय एवं संगीतात्मकता की दृष्टि से यह 'रामचरितमानस' से बड़ी रचना है। अर्थ-गाम्भीर्य एवं उक्ति-वैचित्र्य की दृष्टि से यह तुलसीदास की उत्कृष्ट रचना है। विनय पत्रिका में कुल 279 पद हैं। जो विभिन्न रागों में आबद्ध हैं। तुलसीदास ने विनय पत्रिका की रचना राग बिलावल, धनाश्री, रामकली, भैरव, कान्हरा, केदारा, टोड़ी, सोरठा आदि अनेक रागों में की है। विनय पत्रिका की रचना मुक्तक गेय पदों में हुई है। विविध अलंकारों से सुसज्जित इसकी भाषा ब्रजभाषा है। अरबी-फारसी भाषा के शब्दों के साथ-साथ लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग भी तुलसीदास ने विनय पत्रिका में की है।

दोहावली —

तुलसीदास द्वारा रचित दोहावली में कुल 573 दोहे संकलित हैं। जिनमें से 85 दोहे 'रामचरितमानस' के हैं, कुछ 'रामाज्ञा प्रश्न' एवं कुछ 'वैराग्य संदीपनी' के हैं। इस ग्रन्थ की विषय-वस्तु राम नाम का महात्म्य, नीति, प्रेम का आदर्श, भक्ति का आदर्श आदि से सम्बन्धित हैं। कलियुगी राजाओं के अनैतिक आचरण का वर्णन भी इसमें है। दोहावली की भाषा ब्रजभाषा है तथा अपने सांगरूपकों के लिए प्रसिद्ध है।

बरवै रामायण —

बरवै रामायण रामचरितात्मक एक लघु काव्य रचना है। इसमें कुल 69 बरवै हैं, जो सात काण्डों — बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड,

किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड) में विभक्त है। सीता-सौन्दर्य, रामचरित, सीता विवाह वर्णन, सेना वर्णन आदि का अद्भुत आलंकारिक वर्णन है। वैराग्य, दैन्य, शान्त आदि भावों का वर्णन है। इसकी रचना बरवै छन्द में हुई है। इसकी काव्यभाषा अवधी है।

रामाज्ञा प्रश्न —

इसमें राम की सम्पूर्ण कथा दोहा छन्द में वर्णित है। इसलिए इसे कुछ विद्वान 'दोहावली रामायण' भी कहते हैं। इस ग्रन्थ पर 'वाल्मीकि रामायण' का प्रभाव है। इसमें रसात्मकता का अभाव है केवल घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन है।

रामलला नहछू —

यह एक लोकगीत है, जिसकी अभिव्यक्ति संगीतात्मक है। इसमें कुल 20 छन्द हैं। 'नहछू' एक प्रकार का अनुष्ठान है, जिसमें विवाह एवं यज्ञोपवीत के अवसर पर ~~क्रक~~ 'नखच्छेदन' होता है। इसमें राम के नखच्छेदन का वर्णन है। इसकी भाषा ठेठ अवधी एवं छन्द सोहर है।

कवितावली —

कवितावली एक मुक्तक-काव्य है, जिसकी रचना कवित्त-शैली में हुई है। घनाक्षरी, सवैया एवं छप्पय इन तीन छन्दों को ~~क्रक~~ 'कवित्त' कहा जाता है। यह तुलसीदास की अन्तिम रचना है। कवितावली भी 7 काण्डों में विभक्त है। इसका प्रत्येक पद अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। इसमें विषय का वैविध्य एवं विस्तार है। कवितावली में रामकथा के अतिरिक्त कृष्णचरित सम्बन्धी भ्रमरगीत प्रसंग भी संकलित है। इस ग्रन्थ के परिशिष्ट के रूप में 'हनुमान बाहुक' संकलित हैं। इसमें वीर रस, भयानक रस एवं वात्सल्य रस की सुन्दर योजना है। कवितावली की भाषा ब्रजभाषा है, किन्तु अवधी, राजस्थानी, बुन्देली, अरबी-फारसी के शब्द भी प्रयुक्त हैं।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

कवितावली में तुलसीदास ने सवैया, कवित्त, घनाक्षरी, छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग किया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसीदास का काव्य लोककल्याण के लिए है। उनकी दृष्टि में सत्यं शिवं सुन्दरं का समन्वय है। तुलसीदास सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय को प्रमुखता देते हैं।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास